+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

TODAY'S ANALYSIS
(आज का विश्लेषण)
(24 October 2024)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी-राष्ट्रपति शी जिनपिंग की पांच वर्षों में पहली बार औपचारिक द्विपक्षीय वार्ता
- जियो-इंजीनियरिंग की एक पहल: आकाश में हीरे के धूल के छिड़काव से पृथ्वी को ठंडा रखने का प्रयास
- देश में साइबर धोखाधड़ी से होने वाला नुकसान सकल घरेलू उत्पाद के 0.7 प्रतिशत तक हो सकता है
- MCQ

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी-राष्ट्रपति शी जिनपिंग की पांच वर्षों में पहली बार औपचारिक द्विपक्षीय वार्ता:

चर्चा में क्यों है?

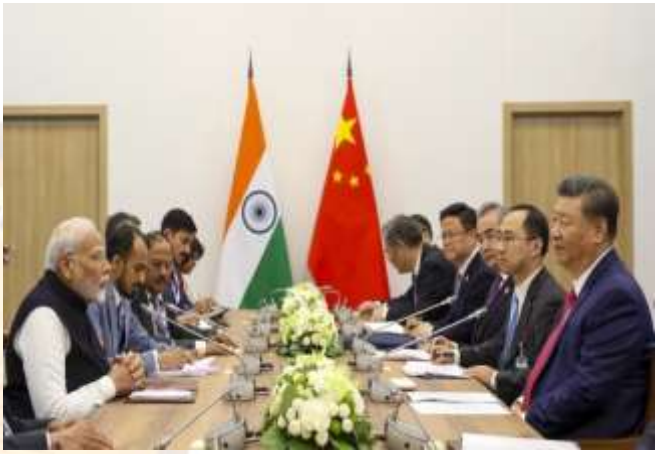

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने 2019 के बाद पहली द्विपक्षीय बैठक के लिए रूस के कजान शहर में मुलाकात की। वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) का उल्लंघन करने की चीन की "एकतरफा" कार्रवाई के परिणामस्वरूप लद्दाख में सैन्य गतिरोध के बाद से भारत और चीन के बीच संबंधों में गंभीर गिरावट आई है।
- उल्लेखनीय है कि ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच द्विपक्षीय वार्ता, कूटनीतिक और सैन्य दोनों स्तरों पर हुई सफलता के 72 घंटे से भी कम समय बाद हुई, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि मई 2020 से पहले की स्थिति वापस आ जाए, जब लद्दाख में गतिरोध की शुरुआत गलवान में सैन्य झड़प से हुई थी। इस बैठक में वास्तविक नियंत्रण रेखा

पर गश्त व्यवस्था पर आम सहमति बनने के बाद भारत-चीन संबंधों में आए सुधार को रेखांकित किया गया, जिसमें पिछले कुछ वर्षों में कई रुकावटें आई थीं।

प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने क्या चर्चा की?

- इस द्विपक्षीय बैठक में प्रधानमंत्री मोदी ने मतभेदों और विवादों को उचित तरीके से संभालने और उन्हें शांति और सौहार्द को भंग न करने देने के महत्व को रेखांकित किया।
- दोनों विश्व नेताओं के बीच चर्चा में द्विपक्षीय संबंधों को स्थिर करने और पुनर्निर्माण करने पर चर्चा हुई। दोनों नेताओं ने मुद्दों को सुलझाने और सहयोग बढ़ाने के लिए विदेश मंत्रियों के स्तर पर बैठकों सहित मौजूदा राजनयिक चैनलों का पूरा उपयोग करने पर सहमति व्यक्त की।
- दोनों नेताओं ने पुष्टि की कि दो पड़ोसी और दुनिया के दो सबसे बड़े राष्ट्रों के रूप में भारत और चीन के बीच स्थिर, पूर्वानुमानित और सौहार्दपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों का क्षेत्रीय और वैश्विक शांति और समृद्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।
- प्रधानमंत्री मोदी ने सीमा संबंधी मामलों पर मतभेदों को सीमाओं पर शांति और सौहार्द को भंग न करने देने की आवश्यकता को रेखांकित किया।

- दोनों नेताओं ने कहा कि भारत-चीन सीमा के मुद्दे पर विशेष प्रतिनिधियों को इसके समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है और विशेष प्रतिनिधियों को जल्द से जल्द मिलने और अपने प्रयास जारी रखने का निर्देश दिया है।

राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अधिक संवाद का आह्वान किया:

- प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता के दौरान, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कहा कि दोनों देशों को मतभेदों को ठीक से संभालने के लिए अधिक संवाद और सहयोग करने की आवश्यकता है। क्योंकि दोनों पक्षों के बीच अधिक संवाद और सहयोग, अपने मतभेदों और असहमतियों को ठीक से संभालने और एक-दूसरे की विकास आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने में सहायता करने में महत्वपूर्ण हो सकती है।
- इसके साथ ही दोनों पक्षों के लिए अपनी अंतरराष्ट्रीय जिम्मेदारी को निभाना, विकासशील देशों की ताकत और एकता को बढ़ाने के लिए एक उदाहरण स्थापित करना और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में बहु-ध्रुवीकरण और लोकतंत्र को बढ़ावा देने में योगदान देना भी महत्वपूर्ण है।

चीन के साथ मधुर होते संबंधों के बावजूद भारत निवेश पर अंकुश जारी रखेगा:

- उल्लेखनीय है कि चीन के साथ संबंधों को बेहतर बनाने के लिए किए गए समझौते के बावजूद भारत सीमावर्ती देशों पर निवेश प्रतिबंध जारी रखेगा।

- वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने हाल ही में पड़ोसी देशों के साथ सीमा जैसे भारत के संवेदनशील स्थलों के कारण सुरक्षा उपायों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, जिससे व्यापार प्रतिबंधों में शीघ्र ढील की उम्मीदें कम हो गईं। 2020 में शुरू किए गए इन उपायों ने विशेष रूप से चीनी निवेश को धीमा कर दिया है।

भारत ने 5 चीनी उत्पादों पर एंटी-डंपिंग शुल्क लगाया:

- भारत ने चीन से आने वाले सस्ते आयात से घरेलू खिलाड़ियों को बचाने के लिए ग्लास मिरर और सेलोफेन पारदर्शी फिल्म सहित पांच चीनी वस्तुओं पर पांच साल के लिए एंटी-डंपिंग शुल्क लगाया है। ये शुल्क वाणिज्य मंत्रालय की जांच शाखा 'व्यापार उपचार महानिदेशालय (DGTR)' द्वारा इसके लिए सिफारिशें किए जाने के बाद लगाए गए हैं।
- उल्लेखनीय है कि देशों द्वारा एंटी-डंपिंग जांच यह निर्धारित करने के लिए की जाती है कि सस्ते आयात में वृद्धि के कारण घरेलू उद्योगों को नुकसान हुआ है या नहीं। जवाबी कार्रवाई के रूप में, वे विश्व व्यापार संगठन (WTO) की बहुपक्षीय व्यवस्था के तहत ये शुल्क लगाते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- शुल्क का उद्देश्य निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं को सुनिश्चित करना और विदेशी उत्पादकों और निर्यातकों के मुकाबले घरेलू उत्पादकों के लिए समान अवसर तैयार करना है।
- भारत ने पहले भी चीन सहित विभिन्न देशों से सस्ते आयात से निपटने के लिए कई उत्पादों पर एंटी-डंपिंग शुल्क लगाया है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

जियो-इंजीनियरिंग की एक पहल: आकाश में हीरे के धूल के छिड़काव से पृथ्वी को ठंडा रखने का प्रयास

चर्चा में क्यों है?

- जियोफिजिकल रिसर्च लेटर्स में इस महीने प्रकाशित एक मॉडलिंग अध्ययन में, वैज्ञानिकों ने बताया कि हर साल 5 मिलियन टन हीरे की धूल को समतापमण्डल (Stratosphere) में फेंकने से पृथ्वी 1.6 डिग्री सेल्सियस तक ठंडी हो सकती है - जो ग्लोबल वार्मिंग के सबसे बुरे परिणामों को रोकने के लिए पर्याप्त है।
- हालांकि, यह योजना सस्ती नहीं होगी: विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस सदी के शेष समय में इसकी लागत लगभग 200 ट्रिलियन डॉलर होगी - सल्फर कणों का उपयोग करने के पारंपरिक प्रस्तावों से कहीं अधिक।
- ऐसे समाधान को 'जियो-इंजीनियरिंग' या अधिक विशेष रूप से सौर विकिरण प्रबंधन (SRM) कहा जाता है, का अध्ययन कई वर्षों से किया जा रहा है।

जिओ-इंजीनियरिंग जैसी पहलों की आवश्यकता क्यों पड़ी?

- उल्लेखनीय है कि वैश्विक तापमान वृद्धि को रोकने के लिए अब तक अपनाए गए उपाय अपर्याप्त साबित हुए हैं। वैश्विक तापमान में वृद्धि जारी है और ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन, जो तापमान वृद्धि का मुख्य कारण है, पर अंकुश नहीं लगाया जा सका है, जो 2023 में भी ऊपर की ओर ही रहा है।
- देखा जाये तो वैश्विक तापमान पहले से ही पूर्व-औद्योगिक समय (1850-1900 के बीच) की तुलना में लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस अधिक है, और 2023 में यह लगभग 1.45 डिग्री सेल्सियस अधिक गर्म होगा।
- दुनिया, सामान्य परिस्थितियों में, इस वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस से कम पर नहीं रोक सकती, जो 2015 के पेरिस समझौते में उल्लिखित लक्ष्यों में से एक है। क्योंकि इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए न्यूनतम आवश्यकता यह है कि दुनिया को 2030 तक अपने उत्सर्जन में 2019 के स्तर से कम से कम 43 प्रतिशत की कटौती करनी होगी। हालांकि, चल रही और वादा की गई कार्रवाइयों से 2030 तक केवल दो प्रतिशत की कमी होने की संभावना है।

- नतीजतन, वैज्ञानिक ऐसे क्रांतिकारी तकनीकी समाधानों की तलाश कर रहे हैं जो थोड़े समय में ही नाटकीय परिणाम प्राप्त कर सकें, भले ही अस्थायी रूप से ही क्यों न हो। जियो-इंजीनियरिंग ऐसे विकल्प प्रदान करती है।

जियो-इंजीनियरिंग क्या होती है?

- जियो-इंजीनियरिंग का तात्पर्य ग्लोबल वार्मिंग के प्रतिकूल प्रभावों का मुकाबला करने के लिए पृथ्वी की प्राकृतिक जलवायु प्रणाली को बदलने के किसी भी बड़े पैमाने के प्रयास से है। इससे संबंधित दो व्यापक जियो-इंजीनियरिंग विकल्पों पर विचार किया जा रहा है।
- इनमे से एक विकल्प सौर विकिरण प्रबंधन (SRM), जिसमें आने वाली सौर किरणों को परावर्तित करने और उन्हें पृथ्वी तक पहुँचने से रोकने के लिए अंतरिक्ष में सामग्री तैनात करने का प्रस्ताव है।
- दूसरा विकल्प, कार्बन डाइऑक्साइड रिमूवल (CDR) तकनीकें हैं, जिनमें कार्बन कैप्चर और सीक्वेस्ट्रेशन (CCS) शामिल हैं। हालांकि यह विकल्प उत्सर्जन या तापमान को कम करने के लिए त्वरित समाधान प्रदान करते हैं, लेकिन ये अब तक कोई विशेष व्यवहार्य नहीं हैं।

जियो-इंजीनियरिंग में सौर विकिरण प्रबंधन (SRM) की संभावना:

- जियो-इंजीनियरिंग का सबसे महत्वाकांक्षी और संभावित रूप से फायदेमंद रूप SRM है, जो अभी भी वैचारिक स्तर पर है। यह ज्वालामुखी विस्फोट की प्राकृतिक प्रक्रिया से प्रेरणा लेता है, जिसमें बड़ी मात्रा में सल्फर डाइऑक्साइड निकलता है जो जल वाष्प के साथ मिलकर सल्फेट कण बनाते हैं और सूर्य के प्रकाश को अंतरिक्ष में परावर्तित करते हैं, जिससे पृथ्वी तक पहुँचने वाली मात्रा कम हो जाती है।
- उल्लेखनीय है कि 1991 में फिलीपींस में माउंट पिनातुबो विस्फोट, जो 20वीं सदी में सबसे बड़े विस्फोटों में से एक था, माना जाता है कि उस वर्ष पृथ्वी के तापमान में 0.5 डिग्री सेल्सियस की कमी आई थी। वैज्ञानिक इस प्रक्रिया का कृत्रिम रूप से अनुकरण करने की कोशिश कर रहे हैं।
- इस नए अध्ययन में सात यौगिकों की तुलना की गई और पाया गया कि हीरा वांछित परिणाम देने में सबसे प्रभावी हैं। लेकिन तापमान में 1.6 डिग्री सेल्सियस की कमी लाने के लिए हर साल लगभग पचास लाख टन हीरे को समताप मंडल में छिड़कने की आवश्यकता होगी।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

सौर विकिरण प्रबंधन से जुड़ी चुनौतियां और चिंताएँ:

- सैद्धांतिक रूप से संभव होने के बावजूद, SRM विकल्पों को लागू करने में बड़ी तकनीकी और लागत चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
- इसके अलावा, बड़े पैमाने पर प्राकृतिक प्रक्रियाओं में हेरफेर करने से अनपेक्षित और अप्रत्याशित परिणाम हो सकते हैं। यह वैश्विक और क्षेत्रीय मौसम पैटर्न और वर्षा वितरण को प्रभावित कर सकता है।
- नैतिक चिंताएँ भी हैं क्योंकि प्राकृतिक सूर्य के प्रकाश को बदलने से कृषि, वनस्पति और जैव विविधता प्रभावित हो सकती है, और कुछ जीवन रूपों के लिए हानिकारक हो सकता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

देश में साइबर धोखाधड़ी से होने वाला नुकसान सकल घरेलू उत्पाद के 0.7 प्रतिशत तक हो सकता है:

चर्चा में क्यों है?

- केंद्रीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) के एक अनुमान के अनुसार, साइबर धोखाधड़ी के कारण भारतीयों को अगले साल 1.2 लाख करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान होने की संभावना है।
- I4C के इस अध्ययन के अनुसार, खच्चर (MULE) बैंक खाते ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी में महत्वपूर्ण योगदानकर्ताओं में से एक हैं, जो संभावित रूप से देश के सकल घरेलू उत्पाद का 0.7 प्रतिशत निकाल सकते हैं।
- धोखाधड़ी का अधिकांश पैसा देश से बाहर ले जाया जा रहा है और अधिकांश घोटाले चीन या चीनी-संबंधित संस्थाओं से जुड़े हैं। घरेलू स्तर पर भी घोटाले चल रहे हैं, जहां कई खातों से गुजरने के बाद एटीएम से पैसा निकाला जाता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

देश की अर्थव्यवस्था को अपंग करने वाले घोटाले:

- साइबर घोटाले देश की अर्थव्यवस्था को अपंग करने की क्षमता रखते हैं। इनका इस्तेमाल आतंकवाद के वित्तपोषण और मनी लॉन्ड्रिंग के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, मार्च से मई के दौरान, भारतीय खातों का उपयोग करके ₹5.5 करोड़ की क्रिप्टो करेंसी खरीदी गई और 350 से अधिक लेन-देन में एक अंतरराष्ट्रीय क्रिप्टो एक्सचेंज के माध्यम से देश के बाहर लॉन्डरिंग की गई।
- इस वर्ष की पहली छमाही के दौरान, 30 जून तक, गृह मंत्रालय के साइबर अपराध पोर्टल और 1930 हेल्पलाइन के माध्यम से रिपोर्ट की गई वित्तीय धोखाधड़ी से कुल नुकसान ₹11,269 करोड़ था। ऐसे मामले हैं जो पुलिस द्वारा अलग से दर्ज किए जाते हैं और ऐसे भी मामले हैं जब लोग अपराध की रिपोर्ट नहीं करते हैं।

वित्तीय साइबर धोखाधड़ी का वैश्विक तंत्र:

- I4C के मुख्य कार्यकारी राजेश कुमार ने 3 जनवरी को कहा था कि जिन साइबर अपराधों की शिकायत प्राप्त होती हैं उनमें से लगभग आधे चीन और कंबोडिया और म्यांमार के कुछ हिस्सों से उत्पन्न होते हैं।

- I4C की नागरिक वित्तीय साइबर धोखाधड़ी रिपोर्टिंग और प्रबंधन प्रणाली ने देश भर में 18 एटीएम हॉटस्पॉट की पहचान की है, जहाँ से धोखाधड़ी करके पैसे निकाले गए। दुबई, हांगकांग, बैंकॉक और रूस में खच्चर खातों के डेबिट कार्ड का उपयोग करके विदेशी एटीएम से भी नकदी निकासी की सूचना मिली है।
- भारत सरकार ने कंबोडिया, म्यांमार और लाओस जैसे दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में "घोटाला परिसरों" की पहचान की है जो कॉल सेंटरों से मिलते जुलते हैं और निवेश घोटालों के केंद्र के रूप में उभरे हैं। हाल ही में अज़रबैजान में भी घोटाले के परिसरों की पहचान की गई है।

खच्चर (MULE) बैंक खातों पर लगाम लगाने की पहल:

- I4C की एक प्रस्तुति के अनुसार, जांच एजेंसी हर दिन लगभग 4,000 खच्चर (MULE) बैंक खातों की पहचान करती है।
- खच्चर खातों पर लगाम लगाने के लिए एक तंत्र विकसित करने के लिए गृह मंत्रालय द्वारा वित्त मंत्रालय और भारतीय रिजर्व बैंक के साथ बैठक कर सकता है। क्योंकि बैंक कर्मियों की जानकारी के बिना खच्चर खाते संचालित नहीं हो सकते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- ऐसे में बैंक अधिकारियों को इन खातों को लेकर सतर्क रहने की आवश्यकता है अगर वे ऐसे खातों में असामान्य रूप से उच्च मूल्य के लेन-देन देखते हैं जिनमें कम शेष राशि है या जो वेतनभोगी लोगों के हैं। उल्लेखनीय है कि धोखाधड़ी का पैसा आमतौर पर क्रिप्टोकरेंसी के रूप में देश से बाहर ले जाने से पहले इन खातों में जमा किया जाता है।
- साथ ही बैंकों को एक ही इंटरनेट प्रोटोकॉल (IP) पते से कई बैंक खाता लॉगिन की पहचान करने के लिए अपने सिस्टम को अपडेट करना चाहिए और अगर पता देश के बाहर स्थित है तो कानून प्रवर्तन अधिकारियों को सतर्क करना चाहिए। इसके अतिरिक्त लेन-देन की मात्रा और आवृत्ति में अचानक बदलाव को भी बैंकिंग प्रणाली द्वारा चिह्नित किया जाना चाहिए।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

MCQs

1. चर्चा में रहे 'जियो-इंजीनियरिंग की एक पहल सौर विकिरण प्रबंधन' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

   1. इसके तहत हर साल 5 मिलियन टन हीरे की धूल को समतापमण्डल में फेंकने से पृथ्वी 1.6 डिग्री सेल्सियस तक ठंडी हो सकती है।
   2. विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस सदी के शेष समय में इसकी लागत लगभग 200 ट्रिलियन डॉलर होगी।

   उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1

   (b) केवल 2

   (c) 1 और 2 दोनों

   (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

   Ans:(c)

2. चर्चा में रहे जिओ-इंजीनियरिंग जैसी पहलों की आवश्यकता के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) वैश्विक तापमान पहले से ही पूर्व-औद्योगिक समय की तुलना में लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस अधिक है।

(b) वैश्विक तापमान वृद्धि को रोकने के लिए अब तक अपनाए गए उपाय अपर्याप्त साबित हुए हैं।

(c) वैज्ञानिक ऐसे क्रांतिकारी तकनीकी समाधानों की तलाश कर रहे हैं जो थोड़े समय में ही नाटकीय परिणाम प्राप्त कर सकें।

(d) उपर्युक्त सभी सही हैं।

Ans:(d)

3. वर्ष 1991 में देखा गया 'माउंट पिनाटुबो विस्फोट' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. इस विस्फोट से निकले सल्फर डाइऑक्साइड की राख के कारण पृथ्वी के तापमान में 1.5 डिग्री सेल्सियस की कमी आई थी।

2. वैज्ञानिक इस प्रक्रिया को कृत्रिम रूप से अनुकरण करने की कोशिश कर रहे हैं।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans:(b)

4. चर्चा में रही 'भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C)' निम्नलिखित किस मंत्रालय के अंतर्गत है?

(a) गृह मंत्रालय

(b) कार्मिक मंत्रालय

(c) इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Ans:(a)

5. भारत में 'साइबर धोखाधड़ी' की चुनौती के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. I4C के एक अनुमान के अनुसार, साइबर धोखाधड़ी के कारण भारतीयों को अगले साल 1.2 लाख करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान होने की संभावना है।
2. खच्चर बैंक खाते ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी में महत्वपूर्ण योगदानकर्ताओं में से एक हैं।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Ans:(c)